डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, जोहानिन थियोलाजी, सत्र 11, यीशु के चित्र

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं जो योहानिन धर्मशास्त्र पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 11 है, यीशु के चित्र।

हम योहानिन धर्मशास्त्र का अध्ययन जारी रखते हैं, और आइए इस सत्र के दौरान प्रार्थना से शुरुआत करें।

पिता, आपके पवित्र वचन के लिए धन्यवाद। वही आत्मा जिसने इसे पुराने समय के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से दिया था, हमें प्रकाशित करे ताकि हम इसे समझ सकें, इस पर विश्वास कर सकें, इसका पालन कर सकें और आपकी महिमा के लिए आपकी इच्छा पूरी कर सकें। आपकी कृपा से, हम यीशु के नाम में प्रार्थना करते हैं। आमीन।

हम चौथे सुसमाचार की शिक्षा का अध्ययन कर रहे हैं। हमने यूहन्ना की शैली, संरचना, उद्देश्यों, मैं हूँ कथनों, संकेतों, समय कथनों, यीशु के प्रति दो प्रतिक्रियाओं और यीशु के असंख्य गवाहों के बारे में सोचा है।

अब हम यीशु की तस्वीरों को देखना शुरू करते हैं, यानी मसीह संबंधी तस्वीरें, और फिर उसके उद्धार कार्य की तस्वीरें, जिसमें प्रायश्चित्त शामिल है लेकिन यह सिर्फ क्रूस से भी बड़ा है। यीशु मसीह है। और, बेशक, हम इसे प्रस्तावना में पाते हैं।

यूहन्ना 1:17. फिर से, चीजों को सही परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए। उसे शब्द और प्रकाश कहा गया है।

और फिर आयत 17 में, क्योंकि व्यवस्था मूसा के द्वारा दी गई थी, अनुग्रह और सत्य यीशु मसीह के द्वारा आया। यह पहली बार है जब हमें उसका नाम यीशु मिला है, और उसका शीर्षक, जो उसके नाम का हिस्सा बन गया, या ऐसा लगता है, मसीह या अभिषिक्त व्यक्ति या मसीहा। मसीह, वह वादा किया गया व्यक्ति है।

पुराने नियम में मसीहा शब्द का प्रयोग बहुत कम किया गया है। लेकिन पुराने नियम के कई विषयों में यह विचार प्रमुख है। और यहाँ हमारे पास उपसंहार और हल्की कल्पना है।

सूर्य, श्लोक 14 में प्रकट होता है। और यह हमारे मसीही धर्म संबंधी शीर्षकों में से एक है, परमेश्वर का पुत्र या विषय। लेकिन यीशु मसीह सबसे पहले श्लोक 17 में प्रकट होता है।

हम इसे पहले अध्याय की आयत 45 में भी पाते हैं, यीशु की गवाही के बीच, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बाद यीशु की अन्य गवाहियों में। और फिर हमारे पास फिलिप्पुस, एंड्रयू हैं। अगले दिन,

यूहन्ना के 1:43 में, यीशु ने गलील जाने का फैसला किया; उसने फिलिप्पुस को पाया और उससे कहा, मेरे पीछे आओ।

अब, फिलिप्पुस बेथसैदा से था, जो एंड्रयू और पीटर का शहर था। फिलिप्पुस ने नतनएल को ढूँढ़ा और उससे कहा, हमने उसे पा लिया है जिसके बारे में मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यवक्ताओं ने भी लिखा है, वह है नासरत का यीशु, यूसुफ का पुत्र। मसीहा शब्द नहीं है, लेकिन इसका सटीक अर्थ मसीहा है, जिसके बारे में मूसा ने व्यवस्था में और भविष्यवक्ताओं ने भी लिखा है, वह है नासरत का यीशु, यूसुफ का पुत्र।

यहाँ मसीहाई विचार है, बिना शब्द का उपयोग किए। पुराने नियम में उसके बारे में बताया गया है। यही बात यीशु ने अध्याय पाँच में कही थी, और हमने इसे देखा।

तुम शास्त्रों की खोज करते हो क्योंकि तुम सोचते हो कि उनमें तुम्हें अनन्त जीवन मिलेगा, लेकिन तुम जीवन पाने के लिए मेरे पास नहीं आओगे। तुम समझ नहीं पाते कि शास्त्र मेरे बारे में क्या कहते हैं। तुम मूसा पर भरोसा करते हो; वह तुम्हारा न्यायाधीश बनने वाला है क्योंकि तुम उसके लेखन पर विश्वास नहीं करते।

यदि आप वास्तव में ऐसा करते, यदि आप उनके लेखन की भावना और टेलोस, उनके लेखन के लक्ष्य को समझते, तो आप मुझ पर विश्वास करते।

यूहन्ना 2:19 से 22, हमने इसे पहले भी देखा है; आप हमें इन चीजों को करने के लिए, मंदिर की तथाकथित सफाई के लिए क्या संकेत दिखाते हैं? यूहन्ना 2:19, यीशु ने कहा, इस मंदिर को नष्ट कर दो, और तीन दिनों में मैं इसे खड़ा कर दूंगा। यदि हम वहाँ होते, अन्यजातियों के आँगन में, या शायद महिलाओं के आँगन में, तो हम सोचते कि वह उस संरचना को नष्ट करने की बात कर रहा है, जो पागलपन लगता है, जो जंगली लगता है।

और यहूदियों ने इसे ठीक इसी तरह समझा। अध्याय दो की 20वीं आयत में यहूदियों ने कहा कि इस मंदिर को बनाने में 46 साल लगे थे। यह उस नवीनीकरण के बारे में बात कर रहा है जो हेरोदेस महान के शासनकाल में इतने समय तक चला था, और क्या आप इसे तीन दिनों में खड़ा कर देंगे? यहाँ जोहानिन की संपादकीय टिप्पणी आती है, और बेशक, वे गलत समझते हैं, लेकिन कौन नहीं समझेगा? लेकिन वह अपने शरीर के मंदिर के बारे में बात कर रहा था, यानी, यीशु ने पुराने नियम के कई संदर्भों को प्रतिस्थापित किया, बेहतर कहा, पूरा किया, प्रतिस्थापित किया और बढ़ाया।

लोग, संस्थाएँ, यहाँ मंदिर। वह सच्चा मंदिर है। उसका शरीर ही सच्चा मंदिर है।

वह परमेश्वर की उपस्थिति है। शब्द देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा जमाया। लेकिन जब वह मरे हुएों में से जी उठा तो वह अपने शरीर के मंदिर के बारे में बात कर रहा था।

उसके शिष्यों को याद आया कि उसने यह कहा था, और उन्होंने शास्त्र पर विश्वास किया, और उन्होंने, एलिप्सिस द्वारा, यीशु द्वारा कहे गए शब्द पर विश्वास किया। यीशु मसीह है। मैथ्यू ने कहा,

यह इसलिए हुआ ताकि शास्त्र की यह बात पूरी हो, जिसमें कहा गया था। इसके बजाय, हमारे पास ये कथन हैं जहाँ यीशु कहते हैं, मैं सच्ची दाखलता हूँ, मैं अच्छा चरवाहा हूँ, मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ।

असल में, वह बिना उन शब्दों का इस्तेमाल किए कहता है, मैं सच्चा मंदिर हूँ। इस मंदिर को नष्ट करो, और मैं इसे फिर से खड़ा कर दूँगा। उसका मसीहा होना उसके द्वारा पुराने नियम के परमेश्वर के लोगों की प्रमुख संस्थाओं को पूरा करने और बदलने से पता चलता है।

यहाँ तक कि उनकी पहचान भी। वह सच्चा इस्राएल है। और जो लोग उसके साथ एकता में हैं, विश्वास के द्वारा एकता में हैं, जो लोग उस पर विश्वास करते हैं और उसके साथ एक हो जाते हैं, वे सच्चे इस्राएल, नए इस्राएल, आध्यात्मिक इस्राएल बन जाते हैं।

4:12 में, कुएँ पर खड़ी महिला कहती है, क्या तुम हमारे पिता याकूब से महान हो? उसने हमें कुआँ दिया और खुद भी उससे पानी पिया, उसके बेटों और उसके पशुओं ने भी। एक बार फिर, यह प्रसिद्ध गलतफहमियों में से एक है। ईसाई पाठक कहते हैं, प्रिय महिला, क्या वह याकूब से महान है? उसने याकूब को बनाया।

वह प्रभु है। वह ईश्वर है। बेशक, वह याकूब से भी महान है।

पाठकों को आकर्षित करने के लिए जॉन की यह एक तकनीक है, इस बार मसीह की महानता की पुष्टि करने में थोड़े आक्रोश के साथ। वैसे, इब्रानियों में जॉन की तुलना में बहुत अलग मुहावरे का उपयोग किया गया है, लेकिन यह पुराने नियम के व्यक्तियों, घटनाओं और संस्थाओं की तुलना में मसीह की श्रेष्ठता को भी दर्शाता है। यीशु याकूब से महान है।

अध्याय 5:45 से 47. हम पहले भी यहाँ आ चुके हैं। हम फिर से यहाँ आ गए हैं।

पुराने नियम के शास्त्र यीशु के बारे में बात करते हैं। वे उसमें पूरे होते हैं। हालाँकि मसीहा शब्द का इस्तेमाल बहुत कम किया जाता है, लेकिन वादा किए गए व्यक्ति की अवधारणा का इस्तेमाल कई बार किया जाता है।

यदि तुम मूसा पर विश्वास करते, तो तुम मुझ पर भी विश्वास करते, क्योंकि उसने मेरे बारे में लिखा है। यूहन्ना 5:47, लेकिन यदि तुम उसके लेखन पर विश्वास नहीं करते, तो तुम मेरे शब्दों पर कैसे विश्वास करोगे? मूसा ने अपने जैसे ही एक भविष्यद्वक्ता के बारे में लिखा। मूसा ने संपूर्ण बलिदान प्रणाली देते हुए, अंततः परमेश्वर के मेरे, यूहन्ना 1 की ओर संकेत किया, जो संसार के पाप को दूर ले जाएगा।

मुझे अपने पिछले व्याख्यान में एक सुधार करना है। मैंने माउंट गेरिज़िम को माउंट सिखार के रूप में पहचाना। यह शर्मनाक है।

सूखार सामरिया में एक शहर है। गेरिज़िम सही शब्द है। मैं लड़खड़ा गया क्योंकि मैंने कहा, एक मिनट रुको, गेरिज़िम को कानून में शाप और आशीर्वाद की घोषणा में बुराई के विपरीत रखा

गया है, और यह सच है, लेकिन यह वही गेरिज़िम है जो यहाँ जॉन के सुसमाचार में दिखाई देता है।

इसलिए, पहाड़ का नाम सूखार नहीं है। शहर का नाम सूखार है, जिसे जॉन 4 पढ़ने वाला कोई भी व्यक्ति समझ सकता है। पहाड़ का नाम वहाँ नहीं है, लेकिन यह गेरिज़िम पर्वत है, वही स्थान जिसके बारे में कानून में बताया गया है।

यूहन्ना 8:58, यीशु यहूदियों के साथ युद्ध करता है। ओह, मेरा वचन। ओह, मेरा वचन।

अब्राहम हमारा पिता है, श्लोक 39. यदि तुम अब्राहम के बच्चे होते, तो यीशु कहते हैं, तुम भी वही काम कर रहे होते जो उसने किया। अब, तुम मुझे मारना चाहते हो, एक ऐसे व्यक्ति को जिसने तुम्हें वह सत्य बताया है जो मैंने परमेश्वर से सुना है।

अब्राहम ने ऐसा नहीं किया। आप वही काम कर रहे हैं जो आपके पिता ने किया था। उन्होंने अभी तक यह नहीं बताया है कि उनका पिता कौन है, लेकिन वे जल्द ही उछाल को कम करने जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि हम यौन अनैतिकता से पैदा नहीं हुए हैं। मैथ्यू और ल्यूक के सुसमाचार हमारे प्रभु के कुंवारी गर्भाधान की शिक्षा देते हैं, जिसे पारंपरिक रूप से कुंवारी जन्म कहा जाता है। मैरी ने इस बात से कुछ कलंक झेला, और यहाँ उसका एक निशान है।

ऐसा लगता है कि यह यीशु के लिए कही गई एक गाली है। दूसरे शब्दों में, बुल्टमैन गलत है। नया नियम उन देहाती लोगों द्वारा नहीं लिखा गया था जो स्वर्गदूतों के बक्सों से बाहर निकलने, कुंवारी लड़कियों के जन्म पर विश्वास करते थे।

ओह, वे एक दर्जन से भी ज़्यादा हैं। नहीं, वे एक दर्जन से भी ज़्यादा नहीं थे, और लोगों ने उस स्वर्गदूत की कहानी पर विश्वास नहीं किया, अगर उन्होंने इसे सुना भी हो। हम यौन अनैतिकता से पैदा नहीं हुए हैं, जैसा कि आप थे, ऐसा विचार है।

हमारा एक ही पिता है, वह है परमेश्वर। यीशु ने कहा, यदि परमेश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझसे प्रेम करते, क्योंकि मैं परमेश्वर से आया हूँ, और यहाँ हूँ। मैं अपनी इच्छा से नहीं आया, परन्तु उसने मुझे भेजा।

तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते? ऐसा इसलिए है क्योंकि तुम मेरी बात सुनना बर्दाश्त नहीं कर सकते। तुम अपने पिता शैतान के हो। और तुम्हारी इच्छा अपने पिता की इच्छा पूरी करने की थी।

वह शुरू से ही हत्यारा था, जो पतन का संदर्भ है और जब वह आदम और हव्वा को बहकाता है तो वह उन पर मौत लाता है, और उसका पति भी पाप में शामिल हो जाता है, और वे उस मौत को भुगतते हैं जिसके बारे में परमेश्वर ने उन्हें चेतावनी दी थी कि यदि वे अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाएंगे, जो उन्होंने खाया। और वह सत्य में खड़ा नहीं है क्योंकि उसमें कोई सत्य नहीं है।

जब वह झूठ बोलता है, तो वह अपने चरित्र से बोलता है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है।

लेकिन क्योंकि मैं सच कहता हूँ, तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते। क्योंकि मैं सच कहता हूँ, तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते। उनकी वंशावली दिखाते हुए, वे अब्राहम के बच्चे नहीं हैं।

ओह, वे जातीय रूप से तो हैं, लेकिन आध्यात्मिक रूप से, वे अब्राहम की संतान नहीं हैं। वे अपने पिता शैतान के साथ अपने कार्यों, व्यवहारों और शब्दों में समानता रखना पसंद करेंगे। आप में से कौन मुझे पाप का दोषी ठहराता है? मैं यह अनुशंसा नहीं करता कि हममें से कोई भी अपने शत्रुओं से ऐसा कहे, लेकिन यीशु अपने शत्रुओं से ऐसा कह सकता था।

किसी ने नहीं सुना। अगर मैं सच कहता हूँ, तो तुम मुझ पर यकीन क्यों नहीं करते? जो कोई परमेश्वर का है, वह परमेश्वर की बातें सुनता है। तुम उन्हें इसलिए नहीं सुनते क्योंकि तुम परमेश्वर के नहीं हो।

वाह। यहूदियों ने कहा, क्या हम यह कहने में सही नहीं हैं कि तुम एक सामरी हो और तुम्हारे अंदर दुष्टात्मा है? सामरी होने के बारे में उनके आकलन पर गौर करें। यीशु ने कहा, मुझमें दुष्टात्मा नहीं है, लेकिन मैं अपने पिता का आदर करता हूँ और तुम मेरा अपमान करते हो।

फिर भी मैं अपनी महिमा नहीं चाहता। एक है जो महिमा चाहता है, और वही न्यायी है। मैं तुम से सच सच कहता हूँ, यदि कोई मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्तकाल तक मृत्यु को न देखेगा।

यहूदियों ने उससे कहा, “अब हम ने जान लिया कि तुझ में दुष्टात्मा है। इब्राहीम तो भविष्यद्वक्ताओं की नाई मरा; फिर भी तू कहता है कि यदि कोई मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्तकाल तक न मरेगा। क्षमा कर।”

क्या तुम हमारे पिता अब्राहम से महान हो, जो मर गए? यहाँ फिर से, ईसाई पाठक कहता है, आप शर्त लगाते हैं। और भविष्यद्वक्ता मर गए। तुम अपने आप को कौन समझते हो? यीशु ने उत्तर दिया, यदि मैं अपनी महिमा करूँ, तो मेरी महिमा कुछ भी नहीं है।

जो मेरी महिमा करता है, वह मेरा पिता है, जिसके विषय में तुम कहते हो कि वह हमारा परमेश्वर है। परन्तु तुम उसे नहीं जानते। मैं उसे जानता हूँ।

और अगर मैं कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता, तो मैं भी तुम्हारी तरह झूठा ठहरूँगा। लेकिन मैं उसे जानता हूँ, और उसकी बात मानता हूँ। तुम्हारे पिता अब्राहम ने खुशी मनाई कि वह मेरा दिन देखेगा।

अपने दिन को देखने के लिए सचमुच आनन्दित था। उसने इसे देखा और खुश हुआ। इसलिए, यहूदियों ने उससे कहा, "आप अभी 50 साल के नहीं हैं, और आपने अब्राहम को देखा है।"

यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, अब्राहम के होने से पहले मैं हूँ।" इसलिए, उन्होंने उस पर पत्थर फेंकने के लिए उठाए, लेकिन यीशु ने खुद को मारा और मंदिर से बाहर चला गया। ऐसा नहीं कहा गया है, लेकिन जॉन में पिछले रहस्योद्घाटन के आधार पर पंक्तियों के बीच पढ़ने पर, उन्होंने उस पर पत्थर उठाए, लेकिन वे सफल नहीं हुए क्योंकि उसका समय अभी तक नहीं आया था।

अब्राहम के होने से पहले, मैं हूँ। यह ईश्वरत्व का दावा है। चौथे सुसमाचार के विद्वान कहते थे कि यह निर्गमन 3.14 में निहित है, जो प्रसिद्ध मैं हूँ।

अब, प्रवृत्ति इसे यशायाह की पुस्तक में बाद की कहावतों के साथ पहचानने की है, मैं ही प्रभु हूँ, कोई दूसरा नहीं है, और इसी तरह की अन्य बातें। किसी भी मामले में, यह स्पष्ट रूप से ईश्वरत्व का दावा है। अब्राहम ने अपना दिन इस तरह देखा कि अब्राहम ने परमेश्वर के वादों पर विश्वास किया।

इब्रानियों 11 हमें सिखाता है, उसने उन्हें धुंधले और दूर से देखा, लेकिन फिर भी, उसके विश्वास का अंतिम लक्ष्य वादा किए गए व्यक्ति में था जो आने वाला था। यीशु वह वादा किया हुआ व्यक्ति है। यीशु मसीहा, परमेश्वर का मसीह है।

वह उद्धारकर्ता है, और हमने इसे कई बार देखा है। 2 :1 से 11 में, वह परमेश्वर के नए नियम के लोगों का दूल्हा है, चर्च का दूल्हा, जो विवाह के लिए शराब खत्म होने पर परमेश्वर के राज्य की नई शराब प्रदान करता है। वह यहूदी धर्म की जगह लेता है, जिसका प्रतीक जल शोधन बर्तन और उसके साथ होने वाले समारोहों में है।

वह उसे रद्द कर देता है, उसे पीछे छोड़ देता है, उसे आगे बढ़ाता है, और उसे अपने व्यक्तित्व और कार्य से बदल देता है। वह परमेश्वर के राज्य की नई शराब लाता है, और वास्तव में, इसे अस्थायी रूप से पुराने बर्तनों में डाल दिया जाता है। वह उद्धारकर्ता है, जैसा कि पहला संकेत इंगित करता है।

यूहन्ना 3:16 से 18, मैंने अभी तक नहीं पढ़ा है। क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।

जो कोई भी उस पर विश्वास करता है, उसे दोषी नहीं ठहराया जाता, लेकिन जो कोई भी विश्वास नहीं करता, वह पहले से ही दोषी है क्योंकि उसने परमेश्वर के इकलौते बेटे के नाम पर विश्वास नहीं किया है। यीशु उद्धारकर्ता है। यहाँ, यह वास्तव में सुंदर गद्य में लिखा गया है।

परमेश्वर उस संसार से प्रेम करता है जो उससे घृणा करता है। यह संसार इतना बुरा है कि जब भी संभव हो, वह उसके प्रकाश को दबाने का प्रयास करता है, और परमेश्वर का प्रेम परमेश्वर द्वारा दिए जाने से प्रकट होता है, और वह हमारे लिए और क्या दे सकता है, जैसा कि रोमियों 8 में पौलुस हमें अपने पुत्र से अधिक याद दिलाता है। क्या वह उसके साथ नहीं रहेगा और हमें सब

कुछ नहीं देगा? परमेश्वर ने पुत्र को एक परिपूर्ण जीवन जीने, क्रूस पर मरने, फिर से जी उठने और पिता के पास लौटने के लिए भेजा ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, बल्कि अनन्त जीवन पाए।

नाश होना बाइबिल के उन रूपकों में से एक है जो नरक के बारे में बोलते हैं। यीशु लोगों को नरक से छुड़ाने और उन्हें इसके विपरीत, अनन्त जीवन देने के लिए आए थे, जो एक गुणात्मक धारणा है। यह यूहन्ना 17:3 है, पिता और पुत्र को जानना, जो इस जीवन में शुरू होता है, और मृतकों के पुनरुत्थान में उन्हें और भी अधिक गहराई से, अद्भुत, महान तरीके से जानना।

यह अनन्त काल के लिए एक मात्रात्मक विचार है। परमेश्वर के लोग, परमेश्वर के छुड़ाए हुए और पुनर्जीवित लोग, नई पृथ्वी पर उसकी महिमा करेंगे और उसकी सेवा करेंगे। परमेश्वर ने अपने पुत्र को दण्डित करने के लिए नहीं, बल्कि बचाने के लिए भेजा।

निंदा एक उपोत्पाद है। मैंने कई बार कहा है कि मिशनरी निंदा करने नहीं जाते; वे बचाने जाते हैं। लेकिन जो लोग उनके संदेश को सुनते हैं और उसे अस्वीकार करते हैं, वे उससे भी बदतर न्याय का अनुभव करेंगे, जितना कि अगर उन्होंने कभी मिशनरियों या सुसमाचार या यीशु के बारे में नहीं सुना होता।

हमारे पास यह साकार युगांतशास्त्र है, जो पद 18 में अंतिम बातों का पहले से ही पहलू है। जो कोई विश्वास करता है, उसे दोषी नहीं ठहराया जाता। अंतिम न्याय के समय फैसले की एक वास्तविक, वैध, सटीक भविष्यवाणी है, दोषी नहीं ठहराया जाता, पॉल की वाणी का उपयोग करने के लिए, यीशु में विश्वास करके पहले से ही उचित ठहराया गया।

अंतिम दिन परमेश्वर का फैसला कोई नहीं जान सकता। कोई निंदा नहीं, रोमियों 8:1. यूहन्ना 3:18. अब, कोई भी यह जान सकता है।

हालाँकि, जो कोई भी विश्वास नहीं करता है, उसे पहले ही दोषी ठहराया जा चुका है। मृत्युदंड पहले ही दिया जा चुका है। क्या इसका मतलब यह है कि उनका भाग्य अटल है और उन्हें बदला नहीं जा सकता? नहीं।

इसका मतलब है कि उन्हें दुःख के उस शब्द को सुनना है, नरक की चेतावनी, और उन्हें मसीह के पास भागना है और खुद को उस पर छोड़ देना है, जैसा कि मेरे पादरी कहना पसंद करते हैं, उन्हें बचाने के लिए केवल उस पर भरोसा करना है। यीशु न केवल परमेश्वर का पुत्र है, जैसा कि यह अंश कहता है, बल्कि परमेश्वर के पुत्र के रूप में अपनी भूमिका में, वह उन सभी का उद्धारकर्ता है जो उस पर विश्वास करेंगे। हम इसे अध्याय 6 में देखते हैं। वह उद्धारकर्ता है जो पानी पर चलता है और अपने शिष्यों को बचाता है जो एक तेज़ हवा के साथ एक उबड़-खाबड़ समुद्र में नाव में थे।

उसने उन्हें बचाया और जाहिर तौर पर नाव को तुरंत गलील की झील के दूसरी तरफ ले गया। वह उद्धारकर्ता है, जैसा कि उस चिन्ह से पता चलता है। वह उद्धारकर्ता है।

भेड़शाला का दरवाज़ा। अध्याय 10. मैं भेड़ों का दरवाज़ा हूँ।

अगर कोई मेरे द्वारा प्रवेश करता है, तो वह बच जाएगा। यही तो एक उद्धारकर्ता करता है। वह बचाता है।

यूहन्ना 10, 7, और 9 दिखाते हैं कि वह द्वार, भेड़शाला में प्रवेश द्वार के रूप में अपनी भूमिका में उद्धारकर्ता है। यीशु पर विश्वास करने के अलावा परमेश्वर के नए नियम के लोगों में प्रवेश करने का कोई और तरीका नहीं है। मैं ही मार्ग हूँ।

पिता के पास कोई आता है। यह 14:6 है। सात बार “मैं हूँ” कहा गया है, लेकिन इसके केवल तीन अलग-अलग अर्थ हैं। तीनों का सारांश यहीं दिया गया है।

पहला, मैं ही मार्ग हूँ। मेरे बिना कोई भी पिता के पास नहीं आ सकता। इसकी व्याख्या पिता के स्वर्गीय घर की तस्वीर के संदर्भ में की जानी चाहिए।

यीशु ही उस घर का मार्ग है। वह यहूदियों और अन्यजातियों का एकमात्र उद्धारकर्ता है जो उस पर विश्वास करते हैं। यूहन्ना 21:14.

अगर हम इसे लूका 5 और मछलियों के चमत्कारी पकड़ और उसके साथ दिए गए शब्दों के प्रकाश में पढ़ते हैं, तो हमें ऐसा करना चाहिए क्योंकि यूहन्ना ने पहचान लिया कि यह यीशु था क्योंकि जैसे ही मछलियों की बड़ी पकड़ होती है, वे मछलियों की संख्या के कारण जाल को खींच नहीं पाते हैं। यूहन्ना 21:6. इसलिए उस शिष्य ने जिसे यीशु प्यार करता था, पतरस से कहा; यह प्रभु है। वह लूका 5 और पाठक को याद करता है; यह वही है जो यूहन्ना अक्सर करता है; वह अपने पाठकों से कुछ अपेक्षा करता है।

हमें लूका 5 में जो लिखा है उसे याद रखना चाहिए, और हमें समझना चाहिए कि वहाँ के शब्द यहाँ भी लागू होते हैं। मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुआरे बनाऊँगा। मैं परमेश्वर का पुत्र, उद्धारकर्ता, प्रभु हूँ, जैसा कि यूहन्ना उसे पुकारता है।

वह मरता है और फिर जी उठता है। यह उसके पुनरुत्थान के बाद की घटना है। यह उसके शिष्यों के सामने तीसरी बार प्रकट होना है।

यूहन्ना ने हमें बताया, और उसकी उद्धारक सेवकाई को आगे बढ़ाया गया। हम इसे अध्याय 20 में देखते हैं जब वह शिष्यों पर साँस लेता है, पवित्र आत्मा को प्राप्त करता है, मेरे गवाह बनो, सुसमाचार लेता है, और इस तरह विश्वास या अविश्वास की प्रतिक्रिया के आधार पर पापों को खो देता है और बाँधता है। यहाँ, वह उनकी धारणा को पुष्ट करता है कि उन्हें सुसमाचार प्रचारक होना चाहिए।

उन्हें परमेश्वर के सेवक, उसके राजदूत बनना है। उन्हें मछलियाँ नहीं, बल्कि परमेश्वर के लिए पुरुष और महिलाएँ, लड़के और लड़कियाँ पकड़नी हैं। यीशु मसीह है, वादा किया हुआ, मसीहा।

वह उद्धारकर्ता है, पाप का उद्धारक है। बहुत गहराई से, वह ईश्वर का प्रकटकर्ता है। यह अध्याय 1:1 से 5 में है। केवल वचन में रहने वाले अनन्त जीवन के आधार पर, उसने सभी चीजों का निर्माण किया, और उसके बिना कुछ भी ऐसा नहीं था जो बनाया गया था।

प्रकटकर्ता तीसरा है। और वह जीवन, लॉगोस में वह शाश्वत जीवन, मनुष्यों का प्रकाश है। लॉगोस में शाश्वत जीवन, सभी सृजित जीवन का स्रोत, मनुष्यों का प्रकाश है।

यह ईश्वर का रहस्योद्घाटन है जो मनुष्यों पर चमकता है - उद्देश्यपूर्ण, जननात्मक, लोगों का, पुरुषों का प्रकाश। तो, पूर्व-अवतार शब्द प्रकटकर्ता था।

इसलिए, यह बहुत मायने रखता है कि देहधारी शब्द भी प्रकटकर्ता है। यह अब सामान्य रहस्योद्घाटन नहीं है, बल्कि एक विशेष रहस्योद्घाटन है। शब्द देहधारी हुआ, यूहन्ना 1:14, मांस और रक्त का मनुष्य, और थोड़े समय के लिए हमारे बीच रहा।

और हमने उसकी महिमा देखी है, पिता के इकलौते पुत्र की महिमा, जो अनुग्रह और सच्चाई से भरपूर है। हमने उसकी महिमा देखी है। शब्द, वाक्य और संदेश का कोई व्यक्तित्व नहीं है; वह एक व्यक्ति है।

वह परमेश्वर की कृपा, सत्य और महिमा को पहले कभी नहीं प्रकट करता। वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह परमेश्वर है जो मनुष्य बन गया है। इस प्रकार, वह परमेश्वर के रहस्योद्घाटन का सही संदर्भ है।

वह एक रहस्योद्घाटन है। अवतार एक रहस्योद्घाटन है। वह शब्द जो देहधारी हुआ, वह ईश्वर का प्रकटकर्ता है।

ओह, वह उससे कहीं ज़्यादा है, लेकिन वह उससे कम भी नहीं है। 1:9, सच्चा प्रकाश दुनिया में आ रहा था। इसने हर उस व्यक्ति को प्रकाशित किया जिसके साथ वह संपर्क में आया।

जो कोई भी यीशु के शब्दों को सुनता था या उसके चमत्कार, उसके संकेतों को देखता था अनुभव करता था, परमेश्वर स्वयं को उनके सामने प्रकट कर रहा था। सच्चा प्रकाश संसार में आ रहा था। 1:18, न केवल आरंभ में पहले वाक्य में पहला शब्द शब्द था, जो उसे वाणी के रूप में बताता है, बल्कि जैसे हम अपने संदेश को संप्रेषित करने के लिए शब्दों का उपयोग करते हैं, परमेश्वर ने भी वैसा ही किया।

उनका शब्द ही उनका संचार है। इसलिए, इसमें समावेश है। 1:1, वह शब्द हैं।

1:18, ईश्वर को कभी किसी ने नहीं देखा, जो एक अदृश्य आत्मा है। एकमात्र ईश्वर जो पिता के पास है, उसने उसे जाना है। पुत्र ईश्वर को सर्वोत्कृष्ट रूप से प्रकट करने वाला है।

वह महान भविष्यद्वक्ता है। 9:5, मैं जगत की ज्योति हूँ। यीशु ने कहा, जब तक मैं जगत में हूँ, तब तक मैं जगत की ज्योति हूँ।

जैसा कि हम देखेंगे, आत्मा यीशु का दूसरा रूप है, पवित्र आत्मा, और वह यीशु की भूमिकाएँ निभाता है। और उनमें से एक यह है कि वह परमेश्वर को प्रकट करने वाला है। वह जीवन देने वाला है।

वह दुनिया को पाप और उससे भी ज़्यादा के बारे में समझाता है। वह शिष्यों को सिखाता है। मैं दुनिया की रोशनी हूँ, जिसका मतलब है कि मैं ईश्वर का प्रकाशन हूँ जो मेरे चरित्र, मेरे शब्दों और मेरे कामों में मनुष्यों पर चमकता है।

14:6, मैं ही मार्ग और सत्य हूँ। वह परमेश्वर का प्रकटकर्ता है जो पहले कभी नहीं बोले गए सत्य को बोलता है। 12:49 और 50, और भी उदाहरण हैं।

चिन्हों की पुस्तक में यीशु के परमेश्वर को प्रकट करने के उदाहरण भरे पड़े हैं। 12:49 और 50, मैंने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा, परन्तु पिता जिसने मुझे भेजा है, उसने स्वयं मुझे आज्ञा दी है कि क्या कहूँ और क्या बोलूँ। दूसरे शब्दों में, पिता ने देहधारी पुत्र को अपना प्रकटकर्ता नियुक्त किया है।

विशेष रूप से, मैं जानता हूँ कि यह आज्ञा अनन्त जीवन है। इसलिए, मैं जो कहता हूँ, वह वही है जो पिता ने मुझसे कहा है। अनन्त जीवन की आज्ञा हमें प्रथम यूहन्ना की याद दिलाती है।

मैं इस व्याख्यान श्रृंखला में 1 यूहन्ना में समानताएँ दिखाने का बेहतर काम कर सकता था। उनमें से कई शब्दावली से शुरू होकर अंत तक हैं, लेकिन शायद यूहन्ना हमारे लिए एक बार में संभालने के लिए पर्याप्त है - चौथे सुसमाचार में यीशु की तस्वीरें।

वह मसीह है। वह उद्धारकर्ता है। वह प्रकटकर्ता है।

वह ईश्वर का पुत्र है। प्रस्तावना में उसे पुत्र कहा गया है। यह प्राथमिक संदर्भ नहीं है, लेकिन वह वहाँ है।

14 में, हम पिता के इकलौते बेटे के रूप में उसकी महिमा देखते हैं। हम इसे 2:11 में देखते हैं, पहला संकेत जो यूहन्ना ने दर्ज किया है कि यीशु ने 2:11 किया। पहला संकेत यीशु ने गलील के काना में किया और अपनी महिमा प्रकट की, और उसके शिष्यों ने उस पर विश्वास किया। मैं यह देखने जा रहा हूँ कि क्या मैंने कोई गलती की है।

मुझे लगता है कि 2:11 एक गलत संदर्भ हो सकता है। अगर यह इस व्याख्यान श्रृंखला में एकमात्र है, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन मैं इसे हटा दूंगा ताकि हमारा और समय न लगे। मुझे नहीं लगता कि यह सही है।

5:17 और 18 सही है। जब यीशु परमेश्वर को अपना पिता कहता है, तो वह खुद को परमेश्वर का पुत्र कह रहा होता है। यहूदी यीशु को सता रहे थे 5:16। आपको संदर्भ याद होगा।

यीशु ने एक ऐसे व्यक्ति को चंगा किया जो 38 वर्षों से अपंग था। वे यीशु को सता रहे थे 5:16 क्योंकि वह सब्त के दिन ये काम कर रहा था, लेकिन यीशु ने उत्तर दिया, मेरे पिता अब तक काम कर रहे हैं, और मैं भी काम कर रहा हूँ। जैसा कि मैंने कहा, बाद में तल्मूडिक शब्द हमें इस बात का अंदाजा देते हैं कि नए नियम के समय में यहूदी पहले से ही क्या सोचते थे कि परमेश्वर ने इस कठिन प्रश्न से निपटने के दौरान क्या सोचा था, क्या परमेश्वर शनिवार को छुट्टी लेता है? उत्पत्ति 2 में कहा गया है कि उसने सातवें दिन विश्राम किया।

खैर, उसने कम से कम तीन क्षेत्रों में आराम नहीं किया: बच्चों को दुनिया में लाना, लोगों को मृत्यु के समय दुनिया से बाहर ले जाना, और ईश्वरीय कार्य करना। इस संबंध में, यीशु कह रहे हैं, देखो, भगवान शनिवार को काम करना बंद नहीं करता है। भगवान, जिसे तुम अपना भगवान, मेरा पिता कहते हो, अब तक काम कर रहा है। प्रगतिशील विचार मौजूद हैं, और मैं काम कर रहा हूँ।

यह उनकी समझ में अपमानजनक भाषा है क्योंकि यीशु अपने संकेतों और वास्तव में अपने शब्दों को सर्वशक्तिमान ईश्वर की भविष्यवाणी के बराबर बता रहे हैं। 18 में यही कहा गया है, यहून्ना 5:18। यही कारण था कि यहूदी उसे मारने की कोशिश कर रहे थे, और भी अधिक उसे मारने की, क्योंकि न केवल वह सब्त का उल्लंघन कर रहा था, बल्कि ईश्वर को अपना पिता भी कह रहा था, खुद को ईश्वर के बराबर बता रहा था। उन्होंने कहा होगा कि ईश्वर उनका पिता है।

वे इसे उतना महत्व नहीं देते जितना यीशु अपने और अपने लोगों के लिए देते हैं, लेकिन वे इससे इनकार भी नहीं करते। लेकिन जिस तरह से यीशु यह कर रहे थे, मेरे पिता अब तक काम कर रहे हैं, और मैं भी कर रहा हूँ। यह उनकी समझ में ईशनिंदा है।

कम से कम वे उसे गंभीरता से लेते हैं। जब वह ईश्वर को अपना पिता कहता है, तो वह कह रहा होता है, मैं ईश्वर का पुत्र हूँ। और मैं जो करता हूँ वह सर्वशक्तिमान ईश्वर का ही कार्य है।

इस प्रकार यीशु स्वयं को परमेश्वर का दिव्य पुत्र कहते हैं। 11.4. किसने पाप किया? मुझे खेद है, मैं अंधे व्यक्ति के बारे में सोच रहा हूँ - अध्याय 11.

लाजर बीमार था, और मरियम और मार्था ने यीशु को संदेश भेजा। जिसे तुम प्यार करते हो वह बीमार है। यीशु ने उसे मरने दिया, भले ही यह उनके लिए कितना भी कठिन क्यों न रहा हो।

और उन दोनों ने इस बारे में सोचा था क्योंकि उन्होंने तुरंत यीशु से कहा, यदि आप यहाँ होते, तो हमारा भाई नहीं मरता। यह बीमारी मृत्यु का कारण नहीं बनती। यहून्ना 11.4. यह परमेश्वर की महिमा के लिए है।

ठीक है, मैं समझ गया। वह परमेश्वर के बारे में बात कर रहा है ताकि परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो सके।

वाह! यीशु ने अपनी महिमा को पिता से इस तरह जोड़ा है। फिर से, यह दर्शाता है कि वह परमेश्वर है।

पिता, वह समय आ गया है। 17.1. अपने बेटे को महिमा दें, ताकि आपका बेटा आपको महिमा दे। यहाँ 11 में यीशु कहते हैं, लाज़र मर गया ताकि परमेश्वर की महिमा हो और बेटे की भी महिमा हो।

क्योंकि जब पुत्र की महिमा होती है, तो पिता की भी महिमा होती है। दोहराव पर ध्यान दें, महिमा की महिमा हुई। 11:25-27. महान मैं हूँ कथन।

मैं जानता हूँ कि वह अंतिम दिन जी उठेगा। मैं जीवन का पुनरुत्थान हूँ। यूहन्ना 11:25, एक प्रसिद्ध अंतिम संस्कार श्लोक।

जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह चाहे मर भी जाए, तौभी जीवित रहेगा। जो कोई मर भी जाए और मुझ पर विश्वास करे, तौभी वह कभी न मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करता है? हाँ, प्रभु।

मैं विश्वास करती हूँ कि आप मसीह हैं, मरियम ने पुष्टि की। वह मसीह के बारे में एक सुंदर स्वीकारोक्ति करती है। 20:30 और 31 में उद्देश्य कथन में बाद में जो कहा जाएगा, उसे प्रतिबिंबित करती है।

मेरा मानना है कि आप मसीह हैं, ईश्वर के पुत्र जो दुनिया में आ रहे हैं। वह पुत्र के पूर्व-अस्तित्व का संकेत देती है और कहती है कि वह दुनिया में आने वाली भाषा में अपना अवतार ग्रहण करता है। दुख की बात है कि उसका पुत्रत्व परीक्षणों में दिखाई देता है।

यीशु के क्रूस पर चढ़ने का वर्णन यूहन्ना 19:16-27 में दर्ज है और उसके बाद भी कुछ और में। यह समकालिक सुसमाचारों में है कि ऐसा कहा जाता है कि उसे क्रूस पर चढ़ाया गया क्योंकि उसने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया था। इसे यूहन्ना 19:17 में शब्दशः नहीं देखें।

यीशु मसीह है, उद्धारकर्ता है, प्रकटकर्ता है, पुत्र है, जीवनदाता है। यार, हमने इसे कई बार देखा है। वह प्रस्तावना 1-3 में सृष्टि में जीवनदाता है।

वह जीवन देता है, और वह उन सभी को परमेश्वर के पुत्र बनने का अधिकार देता है जो उस पर विश्वास करते हैं। वह 6-35 में जीवन की रोटी है। वह 10:11 और 10:28 में भेड़ों को अनंत जीवन देता है।

वह पुनरुत्थान और जीवन है 11:25. वह मार्ग, सत्य और जीवन है 14:6. वह सच्ची दाखलता है जो शाखाओं को जीवन देती है 15:1.

बार-बार, यीशु जीवनदाता है। वह 4-46-54 में एक कुलीन व्यक्ति के बेटे को चंगा करता है, उस लड़के को जीवन देता है जो मरने के करीब था। वह अंधे आदमी को रोशनी और जीवन देता है।

यूहन्ना 6, 1-15 में वह लोगों को रोटी और मछलियाँ खिलाकर पोषण देता है। वह अपने मित्र लाज़र को जीवन देता है, जो मर चुका है। यीशु जीवनदाता है।

मैं कहूँगा कि यह मुख्य विषय है। ये सभी विषय महत्वपूर्ण हैं, लेकिन मुख्य क्राइस्टोलॉजिकल विषय, अधिकांश संकेतों का अर्थ, और अधिकांश 'मैं हूँ' का अर्थ यह है कि वह जीवनदाता है। इसके ठीक पीछे यह तथ्य है कि वह प्रकटकर्ता है, लेकिन वह किसी भी चीज़ से ज़्यादा जो प्रकट करता है वह यह है कि वह जीवनदाता है।

क्या वह अपना प्रायश्चित प्रकट नहीं करता? बेशक, वह करता है, और यह बहुत महत्वपूर्ण है। वह न केवल परमेश्वर का मेम्रा है जो संसार को ले जाता है, यूहन्ना 1, बल्कि अन्य चित्र भी हैं, जिन्हें हम अगले व्याख्यान में देखेंगे जो उसकी मृत्यु और यह कैसे बचाता है के बारे में है। लेकिन सबसे बढ़कर, वह वह है जो अनन्त जीवन प्रदान करता है।

मैं इसे इस तरह से कहूँगा। अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से, वह उन सभी को अनन्त जीवन प्रदान करता है जो उस पर विश्वास करते हैं। वह मनुष्य का पुत्र है, 15:1, मध्यस्थ जो स्वर्ग और पृथ्वी को जोड़ने वाली याकूब की सीढ़ी की जगह लेता है, यूहन्ना 3:13 से 15।

यह कुछ ऐसा है जिस पर हमने पहले कभी गौर नहीं किया था। यीशु ने गिनती 21 में, खास तौर पर आयत 9 में मूसा द्वारा जंगल में साँप को ऊपर उठाने का ज़िक्र किया है। परमेश्वर ने अपने अवज्ञाकारी, विद्रोही लोगों का न्याय करने के लिए आग के साँप भेजे थे। उसने मूसा से कहा कि वह एक खंभे पर पीतल का साँप उठाए।

जिसने भी देखा और विश्वास किया, वह बच गया। बाकी लोग नहीं बचे। संदर्भ याद रखें।

नीकोदेमुस, तुम इस्राएल के शिक्षक हो। तुम्हें ये बातें पता होनी चाहिए। इन्हें न जानने के लिए तुम दोषी हो, यहजेकेल 36।

वे कठोर शब्द थे, लेकिन निकोदेमुस को उन्हें सुनने की ज़रूरत थी। अगर मैं तुम्हें सांसारिक बातें बताता, तो नया जन्म सांसारिक होता है क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से होता है, लेकिन यह धरती पर होता है। अगर मैं स्वर्ग में पिता की उपस्थिति में क्या हो रहा है, जिसके बारे में मैं जानता हूँ, उसके बारे में बोलता, तो तुम्हें कोई सुराग नहीं मिलता।

तुम समझ ही नहीं पाए। स्वर्ग में कोई नहीं चढ़ा सिवाय उसके, जो स्वर्ग से उतरा, यानी मनुष्य का बेटा। केवल मनुष्य का बेटा ही उस तरह की जानकारी रखता है, लेकिन तुम उसे समझ नहीं सकते।

और जैसे मूसा ने जंगल में साँप को ऊपर उठाया, यूहन्ना 3:13, 14 अब, वैसे ही मनुष्य के पुत्र को भी ऊपर उठाया जाना चाहिए। मूसा ने साँप को खंभे पर चढ़ाया, पीतल का साँप, उन लोगों के लिए उद्धार का साधन जो इसे देखते हैं और जहरीले साँप के काटने से, घातक साँप के काटने से बच जाते हैं। इसलिए, मनुष्य के पुत्र को भी ऊपर उठाया जाना चाहिए।

खंभे पर चढ़ा हुआ साँप, विडंबना यह है कि शैतान एक साँप है, उद्धारकर्ता, मनुष्य के पुत्र की कार्रवाई में एक प्रकार, एक पूर्वाभास है। जैसे मूसा ने जंगल में साँप को ऊपर उठाया, वैसे ही

मनुष्य के पुत्र को भी ऊपर उठाया जाना चाहिए। यहाँ, दो उपाधियाँ एक साथ आती हैं मनुष्य का पुत्र और उद्धारकर्ता, जो कोई भी उस पर विश्वास करता है उसे अनन्त जीवन मिल सकता है, और जीवनदाता भी, जो उस पर विश्वास करता है, पिता को प्रकट करने वाला।

यूहन्ना इन उपाधियों से भरा पड़ा है। यहाँ, वास्तव में इस्तेमाल किया गया एक पद मनुष्य का पुत्र है। मनुष्य का पुत्र ऊपर उठाया जाएगा।

संख्या 21 में जंगल में मूसा की कार्रवाई प्रतिरूप का प्रतीक है, पुत्र, उद्धारकर्ता, प्रकटकर्ता और जीवनदाता का महिमामंडन जब उसे क्रूस पर चढ़ाया जाता है। 653, जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस नहीं खाते और उसका खून नहीं पीते, तुममें जीवन नहीं है। मनुष्य के पुत्र की जड़ें वास्तव में पुराने नियम में दो अलग-अलग क्षेत्रों में हैं।

भजन 8 में मनुष्य के कमज़ोर, नश्वर पुत्र के बारे में कहा गया है कि वह मनुष्य क्या है कि तू उसका ध्यान रखता है, मनुष्य का पुत्र कि तू उसकी परवाह करता है, परमेश्वर और आकाशीय पिंडों, सितारों, इत्यादि की तुलना में। कमज़ोर, नश्वर मनुष्य। यह ईजेकील के लिए परमेश्वर का पसंदीदा शीर्षक है, जो स्वयं भी एक मनुष्य था।

हालाँकि, दानिय्येल 9, दानिय्येल के मनुष्य का पुत्र, एक दिव्य-मानव व्यक्ति है जो ऊंचा है और पूजा का पात्र है। यदि आप सभी चार सुसमाचारों को एक साथ रखते हैं, तो यीशु के पास मनुष्य के पुत्र के बारे में ऐसी बातें हैं जो भजन 8 के कमज़ोर, नश्वर की तरह लगती हैं। पक्षियों के पास उनके घोंसले हैं, लोमड़ियों के पास उनकी माँदें हैं, मनुष्य के पुत्र के पास अपना सिर रखने की जगह नहीं है। विशेष रूप से उसने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यवाणी की क्योंकि मनुष्य के पुत्र को धोखा दिया जाएगा और उसे सौंप दिया जाएगा, उच्च पुजारियों और शास्त्रियों को सौंप दिया जाएगा जो उसे सूली पर चढ़ाने वाले हैं, और वह तीसरे दिन फिर से जीवित होने वाला है।

और मनुष्य का पुत्र महिमा के बादलों के साथ फिर से आएगा और इसी तरह। दानिय्येल का मनुष्य का पुत्र। यहाँ यूहन्ना 6 में, जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस नहीं खाते और उसका खून नहीं पीते, तुममें जीवन नहीं है।

वह मनुष्य का दिव्य-मानव पुत्र है। जब तक आप उस पर विश्वास नहीं करते, जिसे परमेश्वर ने भेजा है और जो मांस और रक्त का मानव प्राणी है, तब तक आपके अंदर कोई जीवन नहीं है। और फिर, जैसा कि हम अध्याय 9 में पहले ही देख चुके हैं, इसके साथ, हम इस व्याख्यान का समापन करते हैं: पूर्व अंधा व्यक्ति यीशु के हाथों में आसानी से लचीला हो जाता है।

क्या आप मनुष्य के पुत्र पर विश्वास करते हैं? प्रभु, मुझे बताइए कि वह कौन है ताकि मैं उस पर विश्वास कर सकूँ। मैं वह हूँ, यही यीशु के शब्दों का अर्थ है, और भूतपूर्व अंधा व्यक्ति कहता है, प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ, और उसने उसकी पूजा की। यह यीशु की तस्वीरों की एक सरसरी जाँच है।

वह मसीह है, उद्धारकर्ता है, प्रकटकर्ता है, परमेश्वर का पुत्र है, जीवनदाता है, और मनुष्य का पुत्र है। और भी बहुत कुछ है, लेकिन ये शायद चौथे सुसमाचार में सबसे महत्वपूर्ण छह चित्र हैं। हमारे अगले व्याख्यान में, हम यीशु के उद्धारक कार्य के चित्रों पर चर्चा करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा योहानिन धर्मशास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र संख्या 11 है, यीशु के चित्र।